

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत सत्र 2023-24 से पाठ्यपुस्तकों को पुनर्संयोजित किया गया है। यह संजीव बुक्स पूर्णतः नवीन पुनर्संयोजित पाठ्यपुस्तक एवं नवीनतम पाठ्यक्रम पर आधारित है।

नं. 1

संजीव[®]

बुक्स

संस्कृत-XII

(कक्षा 12 के विद्यार्थियों के लिए)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान के विद्यार्थियों के लिए
पूर्णतः नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

- माध्य. शिक्षा बोर्ड, 2024 का प्रश्न-पत्र
- पाठ्यपुस्तक के सभी अभ्यास प्रश्नों का हल
- सभी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नों का समावेश
- योग्य एवं अनुभवी लेखकों द्वारा लिखित
- प्रथम श्रेणी प्राप्त करने के लिए पूर्ण सामग्री

2025

संजीव प्रकाशन,

जयपुर

मूल्य : ₹ 380/-

- प्रकाशक :

संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता,

जयपुर-3

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

website : www.sanjivprakashan.com

- © प्रकाशकाधीन

- मूल्य : ₹ 380.00

- लेजर कम्पोजिंग :

संजीव प्रकाशन (D.T.P. Department), जयपुर

- मुद्रक :

पंजाबी प्रेस, जयपुर

- ❖ इस पुस्तक में त्रुटियों को दूर करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया है। किसी भी त्रुटि के पाये जाने पर अथवा किसी भी तरह के सुझाव के लिए आप हमें निम्न पते पर email या पत्र भेजकर सूचित कर सकते हैं—

email : sanjeevprakashanjaipur@gmail.com

पता : प्रकाशन विभाग संजीव प्रकाशन

धामाणी मार्केट, चौड़ा रास्ता, जयपुर

आपके द्वारा भेजे गये सुझावों से अगला संस्करण और बेहतर हो सकेगा।

- ❖ इस पुस्तक में प्रकाशित किसी त्रुटि के प्रति तथा इससे होने वाली किसी भी क्षति के लिए लेखक, प्रकाशक, संपादक तथा मुद्रक किसी भी रूप में जिम्मेदार नहीं हैं।
- ❖ सभी प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र 'जयपुर' होगा।

(iii)

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान
पाठ्यक्रम

संस्कृत साहित्य-कक्षा 12

इस विषय की परीक्षा योजना निम्नानुसार है—

प्रश्न-पत्र	समय (घंटे)	प्रश्न-पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

एकम्-प्रश्नपत्रम्

अवधि : सपादहोरात्रयम् 3¼

पूर्णांकाः 80

क्र.सं.	अधिगम-क्षेत्रम्	अङ्काः
1.	पठित-अवबोधनम्	30
2.	संस्कृतसाहित्येतिहासस्य परिचयः	10
3.	छन्दोऽलङ्काराः	10
4.	अपठित-अवबोधनम्	8
5.	रचनात्मककार्यम्	10
6.	व्याकरणम्	12

1. पठित-अवबोधनम्—

30

- पाठ्यपुस्तकात् बहुविकल्पात्मकप्रश्नाः (अष्टौ प्रश्नाः) $1 \times 8 = 8$
- अंशत्रयम्—(एकः गद्यांशः, एकः पद्यांशः, एकः नाट्यांशः च) $4 + 4 + 4 = 12$

प्रश्न-वैविध्यम्—

 - एकपदेन उत्तरम् (प्रश्नद्वयम्) $\frac{1}{2} \times 2 = 1$
 - पूर्णवाक्येन उत्तरम् (प्रश्नमेकम्) 1
 - भाषिककार्यम् (बहुविकल्पात्मकप्रश्नचतुष्टयम्) $\frac{1}{2} \times 4 = 2$
 - विशेषण-विशेष्यचयनम्।
 - कर्तृक्रियापदचयनम्।
 - सर्वनामसंज्ञाप्रयोगः।
 - पर्याय-विलोमपदचयनम्।
- पाठप्रसङ्गानुसारं शब्दार्थलेखनम् (चतुश्शब्दानाम्) $\frac{1}{2} \times 4 = 2$
- कथनानि आश्रित्य प्रश्ननिर्माणम् (चतुर्णाम्) $1 \times 4 = 4$
- हिन्दीभाषायां सप्रसङ्गं भावार्थलेखनम् (एकस्य वाक्यस्य पद्यांशस्य वा) 2
- अन्वयलेखनम् (एकस्य पद्यस्य) $1 \times 2 = 2$

(iv)

2. **संस्कृतसाहित्येतिहासस्य परिचयः—** **10**
(अ) प्राचीन-संस्कृतसाहित्येतिहासः (अतिलघूत्तरात्मकपञ्चप्रश्नाः) $1 \times 5 = 5$
(ब) आधुनिक-संस्कृत-साहित्यस्य परिचयः (अतिलघूत्तरात्मकपञ्चप्रश्नाः) $1 \times 5 = 5$
3. **छन्दोऽलङ्काराः** **5+5=10**
(क) **छन्द-परिचयः—** **5**
(i) लघुगुरुविवेकः, छन्दसः सामान्यज्ञानम् (बहुविकल्पात्मक/अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नमेकम्) $1 \times 1 = 1$
(ii) अधोलिखितछन्दसां सोदाहरणं लक्षणम्— **2**
(द्वयोः एकस्य)
अनुष्टुप्, उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा, उपजाति, वसन्ततिलका, वंशस्थ,
मालिनी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडितम्।
(iii) पद्यांशेषु गणचिन्हपूर्वकम् छन्दज्ञानम् (द्वयोः एकस्य) **2**
- (ख) **अलङ्काराः—** **5**
1. अधोलिखित-अलङ्काराणाम् उदाहरणसहितलक्षणज्ञानम्—(त्रिषु द्वयोः) $1\frac{1}{2} \times 2 = 3$
(i) **शब्दालङ्काराः—** अनुप्रासः, यमकः, श्लेषः
(ii) **अर्थालङ्काराः—** उपमा, रूपकम्, उत्प्रेक्षा, अर्थान्तरन्यासः, अन्योक्तिः, व्याजस्तुतिः,
दृष्टान्तः, अतिशयोक्तिः।
2. (i) पद्यांशेषु अलङ्कारस्य नामोल्लेखम् (बहुविकल्पात्मक/अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नमेकम्) $1 \times 1 = 1$
(ii) कस्यापि अलङ्कारस्य सामान्य लक्षणज्ञानम् (बहुविकल्पात्मक/अतिलघूत्तरात्मकप्रश्नमेकम्) **1**
4. **अपठित-अवबोधनम्—** **8**
80-100 शब्दपरिमितः एकः सरलः अपठितः गद्यांशः
(सम्पादितः सरलः साहित्यिकः अंशः)
प्रश्नवैविध्यम्—
(i) एकपदेन-उत्तरम् (प्रश्नचतुष्टयम्) $\frac{1}{2} \times 4 = 2$
(ii) पूर्णवाक्येन-उत्तरम् (प्रश्नत्रयम्) $1 + 1 + 1 = 3$
(iii) **भाषा-सम्बद्धकार्यम् (प्रश्नचतुष्टयम्)** $\frac{1}{2} \times 4 = 2$
(क) कर्तृ-क्रियापदचयनम्
(ख) विशेषण-विशेष्य-प्रयोगः
(ग) सर्वनामप्रयोगः/संज्ञाप्रयोगः
(घ) शब्दार्थचयनम्/विलोमचयनम्
(iv) समुचितशीर्षकप्रदानम् **1**

(v)

5. रचनात्मककार्यम्—	10
(i) कमपि विषयं स्वीकृत्य 50-60 शब्देषु संस्कृतभाषायां लघुनिबन्धलेखनम्	5
(ii) हिन्दीभाषायां लिखितानां पञ्चवाक्यानां संस्कृतभाषया अनुवादः	5
6. व्याकरणम्—	12
(प्रश्नाः—बहुचयनात्मकाः, रिक्तस्थानपूर्तिः, अतिलघूत्तरात्मकाः प्रश्नाः च)	
(i) स्वरसन्धिः, व्यञ्जनसन्धिः (प्रमुख सूत्राणि उदाहरणानि च लघुसिद्धान्तकौमुद्यानुसारम्)	04
(ii) कारकाणि—उपपदविभक्तीनां सूत्रसहितं ज्ञानम्	04
(iii) प्रत्ययाः—तव्यत्, अनीयर्, यत्, ण्यत्, क्यप्, शतृ, शानच्, क्त, क्तवतु, क्त्वा, ल्यप्, तुमुन्, मतुप्, इनि, ठक्, त्व, तल्, टाप्, डीष्।	
(क) प्रकृति-प्रत्ययसंयोगं	2
(ख) प्रकृति-प्रत्ययविभागम्।	2
निर्धारितपुस्तकानि—	
शाश्वती (भाग 2) (राष्ट्रीय-शैक्षिक-अनु. एवं प्रशिक्षण परिषदा प्रकाशितम्)	

नोट— विद्यार्थी उपर्युक्त पाठ्यक्रम को माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध अधिकृत पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें। माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की Website पर उपलब्ध पाठ्यक्रम ही मान्य होगा।

विषय-सूची

1. पठित अवबोधनम् शाश्वती (द्वितीयो भागः)

मङ्गलम्		1-2
प्रथमः पाठः	विद्ययाऽमृतमश्नुते	2-15
द्वितीयः पाठः	रघुकौत्ससंवादः	15-40
तृतीयः पाठः	बालकौतुकम्	41-60
चतुर्थः पाठः	कर्मगौरवम्	60-76
पञ्चमः पाठः	शुकनासोपदेशः	77-93
षष्ठः पाठः	सूक्ति-सुधा	93-111
सप्तमः पाठः	विक्रमस्यौदार्यम्	111-125
अष्टमः पाठः	कार्यं वा साधयेयम्, देहं वा पातयेयम्	126-134
नवम् पाठः	दीनबन्धुः श्रीनायारः	134-144
दशमः पाठः	योगस्य वैशिष्ट्यम्	145-163
एकादशः पाठः	कथं शब्दानुशासनं कर्तव्यम्	163-172

2. संस्कृत-साहित्य का इतिहास

(अ) प्राचीन संस्कृत-साहित्य का इतिहास	173-201
(ब) आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास	202-210

(vii)

अभ्यासार्थ महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर—

(अ) प्राचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास	210-229
(ब) आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास	229-232

3. छन्दोऽलंकार-परिचयः

(क) छन्द : परिचय	233-248
(ख) अलंकार-परिचयः	248-259

4. अपठित-अवबोधनम्

80-100 शब्दपरिमिताः सरलगद्यांशाः	260-278
----------------------------------	---------

5. रचनात्मक-कार्यम्

(i) लघु निबन्ध-लेखनम्	279-285
(ii) अनुवाद-कार्यम्	285-302

6. व्याकरणम्

(i) सन्धिप्रकरणम्	305-329
(ii) कारकाणि	329-354
(iii) प्रत्ययाः (प्रकृति-प्रत्ययसंयोगं विभागञ्च)	355-378



उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2024

संस्कृत साहित्यम्

समय : : 3 घण्टे 15 मिनट (समाद त्रिवादनम्)

पूर्णांक : 80

परीक्षार्थिभ्यः सामान्य निर्देशाः

1. परीक्षार्थिभिः सर्वप्रथमं स्वप्रश्नपत्रोपरि नामांकः अनिवार्यतः लेख्यः।
2. सर्वे प्रश्नाः अनिवार्याः।
3. प्रत्येकं प्रश्नस्योत्तरम् उत्तरपुस्तिकायामेव देयम्।
4. प्रत्येकं प्रश्नभागस्य उत्तरं क्रमानुसारमेकत्रैव लेखितव्यम्।

खण्डः-अ

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्नाः—

- | | | |
|--------|--|-----|
| (i) | ‘अनेजत्’ इति पदं कस्य कृते प्रयुक्तम्? | [1] |
| | (अ) आत्मनः कृते (ब) शरीरस्य कृते (स) संसारस्य कृते (द) विद्यायाः कृते | |
| (ii) | गुरुदक्षिणार्थी कः आसीत्? | [1] |
| | (अ) वरतन्तुः (ब) कौत्सः (स) रघुः (द) रामः | |
| (iii) | ‘कर्मगौरवम्’ इति पाठः कुतः संकलितः? | [1] |
| | (अ) रामायणतः (ब) ऋग्वेदतः (स) महाभाष्यतः (द) श्रीमद्भगवद्गीतातः | |
| (iv) | मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः के भवन्ति? | [1] |
| | (अ) मनुष्याः (ब) पशवः (स) सन्तः (द) असन्तः | |
| (v) | योगाङ्गानि कति भवन्ति? | [1] |
| | (अ) अष्टौ (ब) चत्वारि (स) षट् (द) पञ्च | |
| (vi) | ‘पावका’ इति पदे कः गणः? | [1] |
| | (अ) यगणः (ब) रगणः (स) मगणः (द) जगणः | |
| (vii) | उपमानोपमेययोः अभेदः कुत्र भवति? | [1] |
| | (अ) अनुप्रासे (ब) यमके (स) उपमायाम् (द) रूपके | |
| (viii) | ‘आ + दा + ल्यप्’ इत्यत्र किं पदं भवति? | [1] |
| | (अ) आदातुम् (ब) आदाय्यम् (स) आदाय (द) आदाया | |
| (ix) | ‘वाग्भूषणम्’ इत्यत्र कः सन्धिः? किं च सूत्रम्? | [1] |
| | (अ) चर्त्तम् (खरि च) (ब) जश्त्वम् (झलां जशोऽन्ते) | |
| | (स) श्चुत्वम् (स्तोः श्चुना श्चुः) (द) अनुनासिकः (यरोऽनुनासिकेऽनुनासिको वा) | |

2. रिक्तस्थानानि पूरयत—

उचित-उपपदविभक्ति लिखत-

- | | | |
|-------|--|-----|
| (i) | प्रति कः क्षत्रियः। (महाराज) | [1] |
| (ii) | तुल्यम् औदार्यम् अस्ति। (विक्रम) | [1] |
| (iii) | सीता सह वनम् अगच्छत्। (राम) | [1] |
| (iv) | परितः गोपालकाः सन्ति। (कृष्ण) | [1] |

प्रकृति प्रत्ययौ योजयित्वा लिखत-

- (v) राजा सिंहासने गच्छति। (सम् + उप + विश् + तुमुन्) [1]
 (vi) सः वारिवाहानाम् अभ्यन्तरं । (प्र + विश् + क्त) [1]
 (vii) शिवालयं गच्छति। (गौर + डीष्) [1]

3. (क) अतिलघूत्तरात्मक प्रश्नाः-

- (i) 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि' इति मन्त्रांशः कस्याः उपनिषदः? [1]
 (ii) उपमा-अलङ्कारस्य प्रयोगे कः कविः प्रसिद्धः? [1]
 (iii) 'उत्तररामचरितम्' इति नाटकस्य कथावस्तु कुतः गृहीतम्? [1]
 (iv) कादम्बरी केन लिखिता? [1]
 (v) महाकवेः भर्तृहरेः कति शतकानि? [1]
 (vi) 'शिवराजविजयः' इति कीदृशः उपन्यासः अस्ति? [1]
 (vii) यात्राविलास-महाकाव्यं केन रचितम्? [1]
 (viii) मानवंशमहाकाव्यं केन लिखितम्? [1]
 (ix) 'वैदिककोषः' इति ग्रन्थं कः रचितवान्? [1]
 (x) 'आदर्शरमणी' इति उपन्यासः केन रचितः? [1]

(ख) अधोलिखितपदानां सूत्रोल्लेखपूर्वकं सन्धिविच्छेदं कुरुत।

[1+1+1=3]

- (i) दैत्यारिः
 (ii) कर्मणैव
 (iii) जनयेदज्ञानाम्

खण्डः-ब

4. अधोलिखितयोः छन्दसोः एकस्य लक्षणम् उदाहरणं च लिखत— [2]
 (क) इन्द्रवज्रा (ख) वंशस्थवृत्तम्
5. अधोलिखित—श्लोकांशस्य गणचिह्नं प्रदर्शयन् छन्दसः नामोल्लेखं कुरुत— [2]
 "त्वमेव माता च पिता त्वमेव"
6. अधोलिखितयोः अलंकारयोः कस्यचिद् एकस्य लक्षणम् उदाहरणं च लिखत— [2]
 (क) यमकम् (ख) अतिशयोक्तिः
7. अधोलिखित-श्लोकस्य अलंकारस्य लक्षणं लिखत— [2]
 "तावत् कोकिल विरसान् यापय दिवसान् वनान्तरे निवसन्।
 यावन्मिलदलिमालः कोऽपि रसालः समुल्लसति ॥"
8. अधोलिखित श्लोकस्य अन्वयं लिखत— [2]
 विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
 यशसि चाभिरूचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ॥
9. अधोलिखित शब्दानाम् अर्थं लिखत— [2]
 (क) जवीयः (ख) कोषजातम्
 (ग) असक्तः (घ) मूर्धजाः
10. हिन्दीभाषायां सप्रसङ्गभावार्थं लिखत। [2]
 "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

- अधोलिखितम् अपठित गद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत।
को न जानाति अद्य स्वामिविवेकानन्दम्। अस्य महापुरुषस्य जन्म 1863 तमे ख्रिस्ताब्दे जनवरीमासस्य द्वादशदिनाङ्के मकरसङ्क्रान्तिपर्वणः अवसरे गंगातटे कोलकाता नगरे एकस्मिन् सम्पन्ने परिवारे अभवत्। तस्य माता भुवनेश्वरी देवी पिता च विश्वनाथदत्तः आसीत्। तस्य पिता वाक्कीलः आसीत्। आध्यात्मिकता तु अस्य बालकस्य रक्ते एव आसीत्। तस्य पितामहः दुर्गाचरणः आसीत्। धर्मपरायणी माता बालकं शिवस्य प्रसादं मत्वा तस्य नाम 'वीरेश्वरः' इति कृतवती किन्तु परिवारे व्यवहारे च बालकोऽयं नरेन्द्रनाथ दत्तः एव आसीत्। सः चंचलः आसीत्।
11. एकपदेन उत्तरत— [4×½=2]
(क) स्वामिविवेकानन्दस्य पिता कः आसीत्?
(ख) विवेकानन्दस्य रक्ते का आसीत्?
(ग) माता बालकं कस्य प्रसादं मत्वा तस्य नाम 'वीरेश्वरः' इति कृतवती?
(घ) परिवारे व्यवहारे च अस्य किं नाम आसीत्?
12. पूर्णवाक्येन उत्तरत— [1+1+1=3]
(क) विवेकानन्दस्य जन्म कदा अभवत्?
(ख) स्वामिविवेकानन्दस्य मातुर्नाम किम् आसीत्?
(ग) दुर्गाचरणः कः आसीत्?
13. भाषा—सम्बद्धकार्यम्— [4×½=2]
(क) 'पिता वाक्कीलः आसीत्'? इत्यत्र कर्तृपदं लिखत।
(ख) 'धर्मपरायणी माता बालकं शिवस्य प्रसादं मनुते' इत्यत्र विशेषणपदं लिखत।
(ग) 'तस्य' इति सर्वनामपदस्य सञ्ज्ञापदं लिखत।
(घ) 'स्थिरः' इत्यस्य विलोमपदं लिखत।
14. अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं लिखत। [1]

खण्डः-स

15. अधोलिखितं पठितगद्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत। [5]
मासोऽयमाषाढः, अस्ति च सायं समयः, अस्तं जिगमिषुर्भगवान् भास्करः, सिन्दूरं द्रवस्नातानामिव वरूणदिग् व लम्बिना मरूण वारिवाहानामभ्यन्तरं प्रविष्टः। कलविङ्काश्चाटकैररूतैः परिपूर्णेषु नीडेषु प्रतिनिवर्तन्ते। वनानि प्रतिक्षणमधिकाधिकां श्यामतां कलयन्ति।
- (i) यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत— [1+1+1=3]
(क) कः अस्तं जिगमिषुः? (एकपदेन उत्तरत)
(ख) नीडेषु के प्रतिनिवर्तन्ते? (एकपदेन उत्तरत)
(ग) कानि श्यामतां कलयन्ति? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)
- (ii) भाषिककार्यम्—(प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत) [1+1=2]
(क) 'अस्ति च सायं समयः' इत्यत्र क्रियापदं किम्?
(अ) च (ब) अस्ति (स) सायं (द) समयः
(ख) 'अस्तं जिगमिषुर्भगवान् भास्करः' इत्यत्र विशेष्यं किम्?
(अ) अस्तं (ब) जिगमिषुः (स) भगवान् (द) भास्करः

अथवा

तस्मै राज्ञे व्ययार्थं रत्नचतुष्टयं दास्यामि। एतेषां माहात्म्यम् एकं रत्नं यद्वस्तु स्मर्यते तद्दाति। द्वितीयं रत्नेन भोजनादिकममृततुल्यमुत्पद्यते। तृतीयं रत्नाच्चतुरङ्गबलं भवति। चतुर्थं द्रव्याभरणानि जायन्ते। तदेतानि रत्नानि गृहीत्वा राज्ञो हस्ते प्रयच्छेति।

- (i) यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत— [1+1+1=3]
- (क) राज्ञे किमर्थं रत्नचतुष्टयं दास्यामि? (एकपदेन उत्तरत)
- (ख) भोजनादिकममृततुल्यं केन उत्पद्यते? (एकपदेन उत्तरत)
- (ग) तृतीयरत्नात् किं भवति? (पूर्ण वाक्येन उत्तरत)
- (ii) भाषिककार्यम्—(प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत) [1+1=2]
- (क) 'चतुर्थाद्रत्नाद्दिव्याभरणानि जायन्ते' इत्यत्र कर्तृपदं किम्?
- (अ) चतुर्थात् (ब) दिव्याभरणानि (स) रत्नात् (द) जायन्ते
- (ख) एतानि रत्नानि गृहीत्वा राज्ञो हस्ते प्रयच्छेति वाक्ये विशेष्यं किम्?
- (अ) रत्नानि (ब) एतानि (स) राज्ञो हस्ते (द) प्रयच्छ
16. अधोलिखितं पद्यं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत। [5]
- सर्वत्र नो वार्तमवेहि राजन्,
नाथे कुतस्त्वय्यशुभं प्रजानाम्।
सूर्ये तपत्यावरणाय दृष्टेः,
कल्पेत लोकस्य कथं तमिस्रा ॥
- (i) यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत— [1+1+1=3]
- (क) नः किम् अवेहि? (एकपदेन उत्तरत)
- (ख) त्वयि नाथे केषाम् अशुभं न भवति? (एकपदेन उत्तरत)
- (ग) सूर्ये तपति लोकस्य दृष्टेः आवरणाय का न कल्पेत? (पूर्ण वाक्येन उत्तरत)
- (ii) भाषिककार्यम् (प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत) [1+1=2]
- (क) 'सर्वत्र नो वार्तमवेहि राजन्' इत्यत्र क्रियापदं किम्?
- (अ) नो (ब) वार्तम् (स) अवेहि (द) राजन्
- (ख) 'कुशलताम्' इति पदस्य पर्यायपदं किम्?
- (अ) अशुभम् (ब) वार्तम् (स) कल्पेत (द) तमिस्रा
- अथवा**
- स्वायत्तमेकान्तगुणं विधान्ना विनिर्मितं छादनमज्ञतायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम् ॥
- (i) यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत— [1+1=1=3]
- (क) स्वायत्तमेकान्तगुणं केन विनिर्मितम्? (एकपदेन उत्तरत)
- (ख) मौनं केषां समाजे अपण्डितानां विभूषणं भवति? (एकपदेन उत्तरत)
- (ग) अज्ञतायाः छादनम् एकान्तगुणं किम्? (पूर्णवाक्येन उत्तरं चिनुत)
- (ii) भाषिककार्यम् (प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत) [1+1=2]
- (क) 'विधान्ना स्वायत्तमेकान्तगुणं मौनं विनिर्मितम्' इत्यत्र क्रियापदं किम्?
- (अ) विधान्ना (ब) एकान्तगुणं (स) विनिर्मितम् (द) मौनं
- (ख) 'पण्डितानाम्' इत्यस्य विलोमपदं किम्?
- (अ) अपण्डितानाम् (ब) सर्वविदाम् (स) विभूषणानाम् (द) मौनानाम्
17. अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा प्रश्नानाम् उत्तराणि यथानिर्देशं लिखत। [5]
- स्वप्निलः — आचार्य! योगाङ्गानां नामानि तु अस्माभिः सुष्ठु ज्ञातानि अबबुद्धानि चाऽपि। साम्प्रतं योगाङ्गानां फलमपि ज्ञातुं महती उत्कण्ठा वर्तते।

योगाचार्यः	—	आम् आम् तदपि बोधयामि। शृण्वन्तु, लिखन्तु अवबुध्यन्तु च तावत्।
यमः	—	
अहिंसा	—	अहिंसाप्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरत्यागः।
सत्यम्	—	सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्वम्।
अस्तेयम्	—	अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम्।
ब्रह्मचर्यम्	—	ब्रह्मचर्यप्रतिष्ठायां वीर्यलाभः।
अपरिग्रहः	—	अपरिग्रहस्थैर्यै जन्मकथन्ता सम्बोधः।

(i) यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत— [1+1+1=3]

- (क) स्वप्निलस्य केषां फलं ज्ञातुं महती उत्कण्ठा वर्तते? (एकपदेन उत्तरत)
 (ख) यमाः कति? (एकपदेन उत्तरत)
 (ग) वीर्यलाभः कुत्र भवति? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)

(ii) भाषिककार्यम् (प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत) [1+1=2]

- (क) 'योगाङ्गानां फलमपि ज्ञातुं महती उत्कण्ठा वर्तते' इत्यत्र विशेषणपदं किम्?
 (अ) योगाङ्गानाम् (ब) फलमपि (स) उत्कण्ठा (द) महती
 (ख) 'योगाङ्गानां नामानि अस्माभिः ज्ञातानि' इत्यत्र क्रियापदं किम्?
 (अ) योगाङ्गानाम् (ब) अस्माभिः (स) ज्ञातानि (द) नामानि

अथवा

लवः — (प्रविश्य, स्वगतम्) अविज्ञातवयः क्रमौचित्यात् पूज्यान्पि सतः कथमभिवादयिष्ये?
 (विचिन्त्य) अयं पुनरविरुद्ध प्रकार इति वृद्धेभ्यः श्रूयते। (सविनयमुपसृत्य) एष वो
 लवस्य शिरसा प्रणामपर्यायः।

अरुन्धतीजनकौ — कल्याणिन्! आयुष्मान् भूयाः।

कौसल्या — जात! चिरं जीव।

अरुन्धती — एहि वत्स! (लवमुत्सङ्गे गृहीत्वा आत्मगतम्)

दिष्ट्या न केवलमुत्सङ्गशिरान्मनोरथोऽपि मे पुरितः।

कौसल्या — जात! इतोऽपि तावदेहि। (उत्सङ्गे गृहीत्वा) अहो, न केवलं मांसलोज्ज्वलेन देहबन्धेन,
 कलहंसघोषघर्गरानुनादिना स्वरेण च रामभद्रमनुसरति। जात! पश्यामि ते मुख पुण्डरीकम्।
 (चिबुकमुन्नमय्य, निरूप्य, सवाष्पाकृतम्) राजर्षे! किं न पश्यसि? निपुणं निरूप्यमाणो
 वत्साया मे वध्वा मुखचन्द्रेणापि संवदत्येव।

(i) यथानिर्देशम् उत्तरं लिखत— [1+1+1=3]

- (क) 'अयं पुनरविरुद्ध प्रकार' इति केभ्यः श्रूयते? (एकपदेन उत्तरत)
 (ख) लवः कीदृशेन देहबन्धेन रामभद्रमनुसरति? (एकपदेन उत्तरत)
 (ग) 'जात! चिरं जीव' इति का वदति? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)

(ii) भाषिककार्यम् (प्रदत्तविकल्पेभ्यः उत्तरं चिनुत) [1+1=2]

- (क) 'इतोऽपि तावदेहि' इत्यत्र क्रियापदं किम्?
 (अ) अपि (ब) इतः (स) एहि (द) तावद्
 (ख) 'मांसलोज्ज्वलेन देहबन्धेन' इत्यत्र विशेष्यपदं किम्?
 (अ) देहबन्धेन (ब) उज्ज्वलेन (स) बन्धेन (द) मांसलोज्ज्वलेन

खण्ड:-द

18. रेखांकित पदेषु प्रश्ननिर्माणं कुरुत। (केषाञ्चित् चतुर्णाम्) [4×1=4]
 (क) 'उत्तररामचरितम्' इति नाटकस्य रचयिता भवभूतिः।
 (ख) लवः रामभद्रम् अनुसरति।
 (ग) स चपलः दृश्यते।
 (घ) अकर्मणः कर्म ज्यायः।
 (ङ) श्रीनायारस्य राज्येन सह कश्चित् सम्पर्कः नास्ति।
 (च) शब्दानां प्रतिपत्तौ प्रतिपदपाठः कर्तव्यः।
19. अधोलिखित वाक्यानां संस्कृतभाषायाम् अनुवादः करणीयः। (केषाञ्चित् पञ्चानाम्) [5×1=5]
 (क) विद्या से अमरता प्राप्त होती है।
 (ख) हिमांगी शिव की अर्चना करती है।
 (ग) शिशु दूध पीवे।
 (घ) कुमुद पानी से मुँह धोता है।
 (ङ) गीता को रामायण पढ़ना अच्छा लगता है।
 (च) धन से ज्ञान अच्छा है।
 (छ) कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है।
 (ज) तिलों में तेल है।
20. निम्नलिखितेषु कमपि विषयं स्वीकृत्य 50-60 शब्देषु संस्कृत भाषायां निबन्धं लिखत। [5]
 (क) सतां सङ्गतिः (सत्सङ्गतिः)।
 (ख) भारत देशः
 (ग) संस्कृतं संस्कृताश्रिता

संस्कृत कक्षा-XII

1. पठित अवबोधनम् शाश्वती (द्वितीयो भागः)

मङ्गलम्

(1)

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः
भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनुभि-
र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः ॥ 1 ॥

अन्वयः—देवाः ! (वयं) कर्णेभिः भद्रं शृणुयाम । अक्षभिः भद्रं पश्येम । स्थिरैः अङ्गैः तनुभिः तुष्टुवांसः देवहितं यदायुः व्यशेमहि ॥

शब्दार्थ—देवाः = हे देवगण ! कर्णेभिः = कानों से । भद्रम् = कल्याणकारी । शृणुयाम = सुने । अक्षभिः = आँखों से । पश्येम = देखें । स्थिरैः अङ्गैः = स्थिर अंगों से । तनुभिः = शरीरों से । देवहितम् = दिव्य । व्यशेमहि = प्राप्त करें ।

हिन्दी-अनुवाद—हे देवगण ! (हम) कानों से कल्याणकारी वचनों को सुनें । आँखों से कल्याणकारी दृश्य देखें । स्थिर अंगों वाले शरीरों से स्तुति करते हुये दिव्य आयु (शतायु) को प्राप्त करें ।

(2)

मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्वोषधीः ॥ 2 ॥

अन्वयः—मधु वाता ऋतायते । सिन्धवः मधु क्षरन्ति । ओषधीः नः माध्वीः सन्तु ।
शब्दार्थ—मधु = सुगन्धियुक्त । वाताः = वायु, हवा । ऋतायते = बहे । सिन्धवः = नदियाँ, सागर । मधु = मधुर जल को । क्षरन्ति = युक्त हो । ओषधीः = ओषधियाँ । नः = हमारे लिए । माध्वीः = मधुमय, अमृततुल्य । सन्तु = होवें ।

हिन्दी-अनुवाद—सुगन्धियुक्त वायु बहे, हवा चले । नदियाँ मधुर जल से युक्त हों । ओषधियाँ हमारे लिए अमृततुल्य होवें ।

(3)

मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवं रजः ।
मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ 3 ॥

अन्वयः—नक्तम् मधु (अस्तु), उत उषस मधुमत् (अस्तु), पार्थिवं रजः मधुमत् (अस्तु), द्यौः मधु अस्तु, पिता नः मधु अस्तु ॥

शब्दार्थ—नक्तम् = रात्रि । मधु = मधुमय । उषस = उषाकाल, प्रातःकाल । मधुमत् = माधुर्य युक्त । पार्थिवम् = पृथ्वी की । रजः = धूलि । द्यौः = द्यु लोक । पिता = परमेश्वर । नः = हमारे लिए । अस्तु = होवे ।

हिन्दी-अनुवाद—रात्रियाँ मधुमय हों, माधुर्य युक्त होवें । प्रातःकाल मधुर (सुप्रभात) हों । पृथिवी की धूलि भी मधुमय अर्थात् मधुर अन्न को प्रदान करने वाली होवे । द्यु लोक प्रकाशयुक्त होवे । वह परम पिता परमेश्वर हमारे लिए कल्याणकारी हो ।

(4)

मधुमान्नोवनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः ।

माध्वीर्गावो भवन्तुः नः ॥ 4 ॥

अन्वयः—वनस्पतिः नः मधुमान् (अस्तु), सूर्यः मधुमान् अस्तु, गावः नः माध्वीः भवन्तु ॥

शब्दार्थ—वनस्पतिः = वनस्पतियाँ । नः = हमारे लिए । मधुमान् = मधुरता-युक्त । गावः = गायें । माध्वीः = मधुर । भवन्तु = हों ।

हिन्दी-अनुवाद—वनस्पतियाँ हमारे लिए मधुरतायुक्त हों, सूर्य मधुर होवे अर्थात् मधुर अन्नादि प्रदान करने वाला होवे । गायें हमारे लिए मधुर हों अर्थात् हमें मधुर दूध देने वाली हों ।

प्रथमः पाठः

विद्ययाऽमृतमश्नुते

(विद्या द्वारा अमरता को प्राप्त करता है)

पाठ-सार

प्रस्तुत पाठ 'ईशावास्योपनिषत्' से संकलित है । 'ईशावास्यम्' पद से आरम्भ होने के कारण इसे ईशावास्योपनिषत् की संज्ञा दी गई है । यह उपनिषत् यजुर्वेद की माध्यन्दिन एवं काण्व संहिता का 40वाँ अध्याय है, जिसमें 18 मन्त्र हैं ।

इस पाठ के प्रारम्भ में दो मन्त्रों में ईश्वर की सर्वत्र विद्यमानता को दर्शाते हुए, कर्तव्य भावना से कर्म करने एवं त्यागपूर्वक संसार के पदार्थों का उपयोग एवं संरक्षण करने का निर्देश दिया गया है । आत्मस्वरूप ईश्वर की व्यापकता को जो लोग स्वीकार नहीं करते हैं, उनके अज्ञान को तृतीय मन्त्र में दर्शाया है । चतुर्थ मन्त्र में चैतन्य स्वरूप, स्वयं प्रकाश एवं विभु सर्वव्यापक आत्म तत्त्व का निरूपण है । पञ्चम एवं षष्ठ मन्त्रों में अविद्या अर्थात् व्यावहारिक ज्ञान एवं विद्या अर्थात् आध्यात्मिक ज्ञान पर सूक्ष्म चिन्तन निहित है । अन्तिम मन्त्र व्यावहारिक ज्ञान से लौकिक अभ्युदय एवं अध्यात्मज्ञान से अमरता की प्राप्ति को बतलाता है ।

इस पाठ्यांश से यह सन्देश मिलता है कि लौकिक एवं अध्यात्म विद्या एक-दूसरे की पूरक है तथा मानव जीवन की परिपूर्णता एवं सर्वाङ्गीण विकास में समान रूप से महत्त्व रखती है ।

पद्यांशों/मन्त्रों का अन्वय, शब्दार्थ, हिन्दी अनुवाद एवं पठितावबोधनम्—

(1)

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ॥ 1 ॥

अन्वयः—जगत्यां यत् किञ्च जगत् इदम् सर्वं ईशावास्यं, तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, कस्यस्विद् धनं मा गृधः ।

शब्दार्थ—जगत्याम् = इस संसार में । यत् किञ्च = जो कुछ भी । जगत् = चराचर जगत् है । इदम् = यह । सर्वम् = सम्पूर्ण । ईशा = परब्रह्म परमेश्वर से । आवास्यम् = व्याप्त है, आच्छादित है । तेन = इसलिए । त्यक्तेन = त्यागपूर्वक अर्थात् आसक्ति रहित होकर । भुञ्जीथाः = उपभोग करो । कस्यस्वित् = किसी के । धनम् = धन की । मा गृधः = आकांक्षा मत करो, लालच मत करो ।

हिन्दी अनुवाद—सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी यह चराचरात्मक जगत् दृष्टिगत हो रहा है, वह सम्पूर्ण ईश्वर से व्याप्त है । इसलिए त्यागवृत्ति से इसका सेवन करो तथा किसी के भी (स्वकीय या परकीय) धन की आकांक्षा मत करो, उसके लिए लोभ मत करो ।

पठितावबोधनकार्यम्—

निर्देशः—उपर्युक्तमन्त्रं पठित्वा एतदाधारितप्रश्नानामुत्तराणि यथानिर्देशं लिखत—

प्रश्नाः—

(क) एकपदेन उत्तरत—

- (i) इदं सर्वं केन आवास्यम्?
(ii) कया भावनया जगत् भुञ्जीत?
- (ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—
किम् मा गृधः?
- (ग) भाषिककार्यम्—(विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत—)
- (i) 'कस्यस्विद्' इत्यस्य पद्यांशे विशेष्यपदं किम्?
(अ) धनम् (ब) सर्वम् (स) जगत् (द) गृधः
- (ii) 'जगत्' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किमस्ति?
(अ) भुञ्जीथा (ब) गृधः (स) आवास्यम् (द) ईशा
- (iii) 'त्यक्तेन' इति संज्ञापदस्य सर्वनामपदं किम्?
(अ) इदम् (ब) तेन (स) सर्वम् (द) मा
- (iv) 'संसारे' इत्यस्य पर्यायपदं मन्त्रात् चित्वा लिखत।
(अ) सर्वम् (ब) जगत् (स) ईशा (द) जगत्याम्
- उत्तराणि—
(क) (i) ईशा (ईश्वरेण)। (ii) त्यागेन।
(ख) कस्यस्विद् धनं मा गृधः।
(ग) (i) (अ) (ii) (स) (iii) (ब) (iv) (द)।

(2)

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।

एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे ॥ 2 ॥

अन्वयः—इह कर्माणि कुर्वन् एव शतं समाः जिजीविषेत् एवम् कर्म त्वयि नरे न लिप्यते, इतः अन्यथा न अस्ति।

शब्दार्थः—इह = इस संसार में। कर्माणि = कर्मों को। कुर्वन् = करते हुए। एव = ही। शतम् समाः = सौ वर्षों तक। जिजीविषेत् = जीने की इच्छा करनी चाहिए। एवम् = इस प्रकार (त्याग भाव से)। कर्म = किये जाने वाले कर्म। त्वयि नरे = तुझ मनुष्य में। न लिप्यते = लिप्त नहीं होंगे। इतः = इससे (भिन्न)। अन्यथा = अन्य कोई प्रकार अर्थात् मार्ग। न अस्ति = नहीं है।

हिन्दी अनुवाद—इस संसार में शास्त्रनियत कर्मों को करते हुए ही सौ वर्षों तक जीने की इच्छा करनी चाहिए। इस प्रकार त्याग भाव से किये जाने वाले कर्म तुझ मनुष्य में लिप्त नहीं होंगे। इससे भिन्न अन्य कोई प्रकार अर्थात् मार्ग नहीं है जिससे कि मानव कर्म के बन्धनों से मुक्त हो सके।

पठितावबोधनकार्यम्—

1. प्रश्नाः—

(माध्य. शिक्षा बोर्ड, मॉडल पेपर 2022-23)

- (i) नरे किं न लिप्यते? (एकपदेन उत्तरत)
(ii) किं कुर्वन् नरः शतं समाः जिजीविषेत्? (पूर्णवाक्येन उत्तरत)
(iii) 'वर्षाणि' इति पदस्य पद्यांशे पर्यायपदं किमस्ति?

उत्तराणि—(i) कर्म।

- (ii) कर्माणि कुर्वन् नरः शतं समाः जिजीविषेत्।
(iii) समाः।

2. प्रश्नाः—

(क) एकपदेन उत्तरत—

- (i) इह कानि कुर्वन् जिजीविषेत्?
(ii) किम् त्वयि न लिप्यते?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

नरः कानि कुर्वन् शतं समाः जिजीविषेत्?

(ग) भाषिककार्यम्—(विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत—)

- (i) 'समाः' इति विशेष्यपदस्य विशेषणपदं किमस्ति?
 (अ) कर्माणि (ब) शतम् (स) कुर्वन् (द) इह
- (ii) 'कर्म' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं पद्यांशे किम्?
 (अ) कुर्वन् (ब) अस्ति (स) जिजीविषेत् (द) लिप्यते
- (iii) 'त्वयि' इति सर्वनामपदस्य संज्ञापदं किम्?
 (अ) नरे (ब) कर्म (स) इह (द) संसारे
- (iv) 'वर्षाणि' इत्यस्य पद्यांशात् पर्यायपदं चित्वा लिखत।
 (अ) शतम् (ब) नान्यथा (स) समाः (द) नरे

उत्तराणि—

- (क) (i) कर्माणि। (ii) कर्म।
 (ख) नरः कर्माणि कुर्वन् शतं समाः जिजीविषेत्।
 (ग) (i) (ब) (ii) (द) (iii) (अ) (iv) (स)।

(3)

असुर्या नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृताः।

तांस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः ॥ 3 ॥

अन्वयः—असुर्याः नाम लोकाः ते अन्धेन तमसा आवृताः, ये च के आत्महनः जनाः ते प्रेत्य तान् अभिगच्छन्ति।

शब्दार्थः—असुर्याः = असुरों के। नाम = प्रसिद्ध। अन्धेन तमसा = अज्ञान तथा दुःख क्लेश रूप महान् अन्धकार से। आवृताः = आच्छादित हैं। ये के च = जो कोई भी। आत्महनः = आत्महत्या करने वाले। प्रेत्य = मरकर। तान् = उन भयंकर लोकों को। अभिगच्छन्ति = बार-बार प्राप्त होते हैं।

हिन्दी अनुवाद—असुरों के जो प्रसिद्ध नाना प्रकार की योनियों वाले नरक रूप लोक हैं, वे सभी अज्ञान तथा दुःख क्लेश रूप महान् अन्धकार से आच्छादित हैं। संसार में जो कोई भी आत्मा की हत्या करने वाले मनुष्य हैं, वे सब मृत्यु के उपरान्त उन्हीं भयंकर लोकों को पुनः-पुनः प्राप्त होते हैं।

पठितावबोधनकार्यम्—

प्रश्नाः—

(क) एकपदेन उत्तरत—

- (i) असुर्याः लोकाः केन आवृताः?
 (ii) कीदृशाः लोकाः अन्धेन तमसा आवृताः?

(ख) पूर्णवाक्येन उत्तरत—

आत्महनः जनाः प्रेत्य कान् अभिगच्छन्ति?

(ग) भाषिककार्यम्—(विकल्पेभ्यः उचितम् उत्तरं चिनुत—)

- (i) 'आत्महनः' इति विशेषणस्य पद्यांशे विशेष्यपदं किम्?
 (अ) लोकाः (ब) प्रेत्य (स) जनाः (द) असुर्याः
- (ii) 'लोकाः' इति कर्तृपदस्य क्रियापदं किमस्ति?
 (अ) आवृताः (ब) तमसा (स) अभिगच्छन्ति (द) सन्ति
- (iii) 'ते प्रेत्य.....।' इत्यत्र 'ते' सर्वनामपदस्थाने संज्ञापदं किम्?
 (अ) लोकाः (ब) असुर्याः (स) तमसा (द) जनाः
- (iv) 'अन्धकारेण' इत्यस्य पर्यायपदं पद्यांशात् चित्वा लिखत।
 (अ) अन्धेन (ब) तमसा (स) असुर्याः (द) आत्महनः

उत्तराणि—

- (क) (i) अन्धेन तमसा। (ii) असुर्याः।
 (ख) आत्महनः जनाः प्रेत्य असुर्या नाम लोकान् अभिगच्छन्ति।
 (ग) (i) (स) (ii) (अ) (iii) (द) (iv) (ब)।